इकाई 29 विदेशी पूंजी निवेश और नव वर्ग का उदय

इकाई की रूपरेखा

29.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- चीन में विदेशी पूंजी के महत्व को समझा पाएंगे,
- सन् 1911 की क्रांति में बूर्जुआ वर्ग की भूमिका के बारे में जान पाएंगे,
- राष्ट्रपति युआन शिकाइ के काल में व्यापारी वर्ग की स्थिति को समझ पाएंगे, और
- यह स्पष्ट कर पाएंगे कि किस तरह प्रथम विश्व युद्ध ने चीनी बूर्जुआ वर्ग के विकास को सुगम किया।

29.1 प्रस्तावना

इस इकाई की शुरुआत चीनी अर्थव्यवस्था में विदेशी पूंजी की भूमिका से होती है। इस इकाई में हमने चीन में बूर्जुआ वर्ग के उदय पर चर्चा की है और यह बताया है कि 1911 की क्रांति में बूर्जुआ वर्ग की क्या भूमिका थी और युआन शिकाइ के शासन के प्रति उनका रवैया क्या रहा। एक ओर तो बूर्जुआ वर्ग ने स्वदेशी उद्योग और व्यापार के विकास में योगदान किया और दूसरी ओर नव संस्कृति आंदोलन के विकास में। उन्होंने शहरी केंद्रों और एक स्पष्ट शहरी संस्कृति के विकास में भी योगदान किया। इस इकाई में हमने इन पहलुओं पर भी विचार किया है।

29.2 कुछ टिप्पणियाँ

पारंपरिक चीनी समाज में मुख्य तौर पर किसान और कुलीन लोग थे। इसके अतिरिक्त सामंत वर्ग और सौदागरों का एक छोटा वर्ग भी था। सौदागर आवश्यक तौर पर शासक वर्ग का अंग नहीं थे। शासक वर्ग की सत्ता जमींदारी, लोक सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण होने और प्रशासनिक ढांचे में व्यक्ति की स्थिति पर आधारित थी। सौदागरों का मुख्य काम व्यापारिक गतिविधियों में सक्रियता थी। चीन में औद्योगीकरण उस तरह नहीं आया, जिस तरह यूरोप और जापान में। जमींदारी का स्वरूप कुछ ऐसा था कि खेतिहरों को और अधिक मुनाफे के लिए अपनी बचत को औद्योगिक विकास में लगाने की आवश्यकता नहीं होती थी। चीन औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा ही रहा और इसलिए आधुनिक प्रौद्योगिकी की

मांग भी सीमित ही रही। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विदेशी ताकतों का सीधे-सीधे दखल होने के बाद से चीन में कुछ बदलाव आया। चीन के आकार और उसकी आबादी को देखते हुए, विदेशी व्यापार और पूंजी निवेश की भूमिका चीन की अर्थव्यवस्था में अपेक्षाकृत कम रही। हाँ, इसके राजनीतिक परिणाम अवश्य निर्णायक रहे। अपने लेख "चीनी समाज में वर्गों का विश्लेषण" में माओ त्से-तुंग ने चीनी समाज में अन्य वर्गों के साथ दो स्पष्ट सामाजिक वर्गों का होना बताया है— कम्प्रेडर बूर्जुआ वर्ग और राष्ट्रीय बूर्जुआ वर्ग। उसके विचार में, इन दोनों वर्गों का भेद 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चीन में चले क्रांतिकारी संघर्ष में उनकी भूमिका से स्पष्ट होता है। राष्ट्रीय बूर्जुआ बुनियादी तौर पर क्रांति और साम्राज्यवाद विरोध के पक्ष में थे। कम्प्रेडर वर्ग साम्राज्यवाद का साथ देने वाला था, इसलिए वह अराष्ट्रभक्त और प्रति क्रांतिकारी या क्रांति-विरोधी था। कुछ विद्वान माओ के इस भेद को कृत्रिम मानते हैं। वे समूचे बूर्जुआ वर्ग को पूरी तौर पर विदेशी पूंजी निवेश और व्यापार पर आश्रित मानते हैं। यह मानना सच्चाई के अधिक निकट होगा कि ये दो अलग वर्ग नहीं थे, बल्कि दो राजनीतिक श्रेणियाँ थीं— राष्ट्रवादी और प्रतिक्रियावादी। महत्वपूर्ण बात वैसे यह है कि यह एक स्पष्ट राजनीतिक वर्ग था और इसने क्रांतिकारी संघर्ष में कोई सार्थक भूमिका नहीं निभाई।

29.3 चीन में विदेशी पूंजी

चीनी अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में जापानी और पश्चिमी प्रभाव देखा जा सकता था। सामान्य तौर पर, अधिकांश चीनी अर्थव्यवस्था विदेशियों की पहुँच से बाहर रही। विश्वसनीय आकलनों के अनुसार, 1914 में चीन में विदेशी पूंजी निवेश 16,100 लाख अमेरिकी डालर था, जबकि 1902 में यह 7330 लाख डालर था। 1914 में चीन की आबादी को 43 करोड़ रखा जाए तो प्रति व्यक्ति यह राशि लगभग 3.75 अमेरिकी डालर आती है। उसी काल में दूसरे उपनिवेशों में जो विदेशी पूंजी-निवेश था उसकी तुलना में यह बहुत ही कम था। 1930 के दशक में भी, चीन में निजी विदेशी पूंजी निवेश उसके कुल राष्ट्रीय उत्पाद का एक प्रतिशत भी नहीं था। बाद के वर्षों में विदेशी पूंजी निवेश बढ़ा, इसका एक कारण कीमतों का बढ़ना था और एक कारण यह था कि विदेशियों ने अपने मुनाफों को फिर से चीन में ही लगा दिया। बार-बार इस तरह निवेश और पुनर्निवेश करने का ही परिणाम था कि एक छोटी-सी एजेंसी के रूप में शुरुआत करने वाली जार्डिन, मार्थसन एवं कंपनी ने एक शताब्दी के अरसे में अपने आपको चीन की सबसे बड़ी विदेशी कंपनी बना लिया, जिसकी पूंजी कई संधिगत बंदरगाहों में कई उद्योगों और वित्तीय हितों में लगी।

विदेशी पूंजी का सीधा निवेश निम्न क्षेत्रों में हुआ :

- आयात और निर्यात,
- व्यापार,
- रेलपथ,
- निर्माण (उत्पादन),
- जायदाद,
- बैंकिंग और वित्त,
- नौ-परिवहन,
- उत्खनन, और
- संचार।

इससे इस तथ्य का पता चलता है कि अनेक अन्य देशों की तरह चीन में उत्खनन अथवा बागान की खेती जैसे निर्यातोन्मुख उद्योगों में बहुत कम विदेशी पूंजी लगी।

विदेशी पूंजी सबसे अधिक संधिगत बंदरगाहों, विशेषकर शंघाई, में लगी। इसलिए इन्हीं स्थानों में, और इन्हीं स्थानों के आसपास, शहरी बूर्जुआ के नए वर्ग का जन्म हुआ। यह सही है कि विदेशी स्वामित्व वाले उद्यमों और चीनी उद्यमों में विदेशी पूंजी निवेश के

कंपनियाँ इस स्थिति में थीं ही नहीं कि विदेशी कंपनियों के साथ होड़ कर सकें। विदेशी कंपनियों के पास अधिक पूंजी, बेहतर प्रौद्योगिकी और प्रबंध तंत्र था, और इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें क्षेत्रीयता के विशेषाधिकार और चीनी करों से छूट मिली हुई थी, और उन्हें चीनी नौकरशाही की समकों के प्रभाव में यहीं आना होता था।

29.4 चीनी बूर्जुआ वर्ग का उदय

यहाँ बूर्जुआ वर्ग शब्द का प्रयोग अधिक संकुचित अर्थ में किया गया है। बूर्जुआ वर्ग को हम एक ऐसे वर्ग के रूप में लेते हैं, जिसमें उद्यमी, आधुनिक ढंग के व्यापारी, पूंजी लगाने वाले और उद्योगपति आते हैं। इसमें आम "मध्यम वर्ग" को शामिल नहीं किया गया है, जिसमें व्यावसायिक लोग, बुद्धिजीवी और जमींदार आते हैं।

सन् 1911 की क्रांति ने बूर्जुआ वर्ग को चीन के आर्थिक और सामाजिक जीवन में बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। 18वीं शताब्दी से, आबादी में होने वाले बदलावों के कारण, चीन में शहरीकरण की गति में तेज़ी आई। इससे उन व्यापारियों और सौदागरों की संख्या भी बढ़ी, जो खाद्यान्न जैसी आवश्यक वस्तुओं को गांवों से खरीद कर उन्हें कस्बों और शहरों में बेचते थे। अफीम युद्ध के बाद से चीन में पश्चिमी ताकतों का हस्तक्षेप और भी उग्र हो जाने पर चीन के तटवर्ती क्षेत्र में जबरदस्त आर्थिक बदलाव देखने में आए। इनमें से कई संधिगत बंदरगाह थे। हावी शहरी वर्गों—सौदागरों और उच्चाधिकारियों—को इसमें मुनाफे का अवसर दिखाई दिया। सौदागरों के पास पूंजी थी, उद्यम संबंधी कौशल था और नए-नए कामों में हाथ डालने की इच्छा थी। उदाहरण के लिए, तीन वर्षों (1895-98) के अरसे में सौदागरों ने कोई 50 उद्यमों में एक करोड़ 20 लाख युआन से भी अधिक राशि लगा दी थी। यह राशि पिछले बीस वर्षों में लगाई गई पूंजी से भी अधिक थी। मन्दारिनों (Mandarins) की प्रशासन और सार्वजनिक कोश तक पहुँच थी, और उनमें जिम्मेदारी का बोध था। कुलीनों और सौदागरों के इन दो वर्गों में जब असाधारण सहयोग और राजनीतिक विलयन हुआ तो, चीनी बूर्जुआ का जन्म हुआ।

सन् 1911 की क्रांति ने मन्दारिनों की स्थिति को कमज़ोर कर दिया था। स्पष्ट था, व्यापारिक प्रयास, राजनीतिक सत्ता नहीं तो आर्थिक स्थिति प्राप्त करने का एक अच्छा विकल्प बन गया। लेकिन 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ना चीनी बूर्जुआ वर्ग के विकास में एक निर्णायक मोड़ बन गया। यह नया वर्ग अब हरकत में आ गया, क्योंकि विदेशी होड़ हट जाने से उसके लिए चीन में और विदेश में भी नए बाज़ार खुल गए थे। व्यापार के फैलने और विविध होने से व्यापार के नए मार्ग खुले। हम देखते हैं कि बैंकर और उद्योगपति चीन की शहरी अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाने लगे। युद्धकाल और प्रारंभिक युद्धोत्तर वर्षों को चीनी बूर्जुआ वर्ग का स्वर्ण युग कहा जाता है। 1927 इस वर्ग के लिए एक और मोड़ था जब चीन के उत्तर में नौकरशाही सैनिक नियंत्रण के कारण एक मुक्त पूंजीवादी व्यवस्था का विकास अवरुद्ध हो गया।

29.5 चीनी बूर्जुआ वर्ग और 1911 की क्रांति

हमने बूर्जुआ वर्ग की आधुनिक व्यापार से बंधे वर्ग के रूप में जो परिभाषा दी है, उसके अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि 1911 की क्रांति में उसकी भूमिका केवल द्वैतीयक या दूसरे स्थान पर ही थी। इस क्रांति की सफलता के बाद बूर्जुआ वर्ग ने इस स्थिति का लाभ उठाने का प्रयास तो अवश्य किया। उनके बुनियादी हितों को सम्मान मिल भी गया, लेकिन वे स्थानीय स्तर के अतिरिक्त और किसी स्तर पर राजनीतिक सत्ता नहीं हथिया पाए।

सन् 1911 में चीनी राजतंत्र का पतन करने वाला वूचंग विद्रोह था तो एक सैनिक प्रयास, लेकिन उसे सौदागरों का समर्थन प्राप्त था। चैंबर ऑफ कॉमर्स ने लुटेरों और आगजनों से सुरक्षा के बदले में विद्रोहियों को भारी ऋण दिया। सौदागरों ने समाज-विरोधियों की तलाश करने के लिए एक सेना का भी गठन किया। एक बहुत मजबूत बूर्जुआ वर्ग को जन्म देने वाले शहर शंघाई में इस वर्ग और क्रांतिकारियों के बीच सहयोग ने क्रांति के सफल होने में एक निर्णायक भूमिका निभाई। व्यापारी वर्ग ने **तुंग मेंग वी** (क्रांतिकारी

गठबंधन) के साथ संपर्क स्थापित किया, जो बाद में कुओमिंतांग बन गया। सैनिकों और व्यापारियों के बीच सहयोग का शंघाई का अनुभव अपवाद था। फिर भी, चीन के अधिकांश भागों में उभरते व्यापारी वर्ग ने गणतंत्रवाद को चुना और राजतंत्र का विरोध किया। बूर्जुआ वर्ग ने विद्रोहों में पहल तो नहीं की, फिर भी उसने क्रांति का सहानुभूति और विश्वास के साथ स्वागत किया।

बूर्जुआ वर्ग की इस महत्वपूर्ण भूमिका को कथित "वैचारिक अतिसंकल्प" की घटना के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है। इस नए वर्ग का उदय जनतंत्र, मुक्ति और राष्ट्रवाद के विचार के साथ-साथ हुआ। ये विचार पश्चिम की देन थे। 18वीं और 19वीं शताब्दियों में जब ये विचार यूरोप में सामने आए तो उभरते बूर्जुआ वर्ग ने उन्हें अपना लिया था। चिंग-विरोधी विपक्ष के नेताओं ने जनतंत्र, संविधानवाद और राष्ट्रवाद के जिन विचारों का प्रचार किया, वे बूर्जुआ वर्ग आकांक्षाओं के अनुरूप थे, इसलिए उन्होंने विपक्षी दलों और संगठनों का समर्थन किया।

क्रांति के तुरंत बाद केंद्रीय सत्ता के अभाव और लोक अधिकारियों की स्थिति खराब हो जाने के कारण स्थिति यह बन गई कि शहरी कुलीनों को बार-बार शहरों का दैनिक प्रशासन अपने हाथों में लेना पड़ा। नागरिक उत्तरदायित्व के कन्फ्यूशियसवादी बोध से प्रेरित होकर उन्होंने सामूहिक रूप से अपने आपको शहरी आबादी की सेवा में लगा दिया, सौदागरों का ध्येय अपने लिए सत्ता हथियाना नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना और समुद्री डाकुओं, लुटेरों, अनुशासनहीन सिपाहियों और गुप्त संगठनों से निपटना था। चैम्बर ऑफ कॉमर्स का काम था—सिपाहियों को वेतन देना, डाकुओं को देश छोड़ने को घूस देना, सेनाओं को भंग करना और प्रतिद्वंद्वी सेनापतियों के बीच विवादों में मध्यस्थता करना। सौदागर वर्ग की राजनीतिक भूमिका सीमित स्तर की थी। उनका प्रयास व्यवस्था को बदलना नहीं था, बल्कि इसकी दोषपूर्ण कार्य-प्रणाली को सुधारने का प्रयास कर इसका अंग बनना था। वे सीधे तौर पर उन राजनीतिक जिम्मेदारियों को लेने को तैयार नहीं थे, जिनसे वे परंपरा से हमेशा अलग रहे थे। इसलिए उनका इसमें शामिल होना केवल कुछ समय के लिए ही हो सकता था। अपनी सीमित राजनीतिक भूमिका और सीधे-सीधे नियंत्रण न होने के कारण उन्हें अनेक जोखिमों का सामना करना पड़ा। स्थानीय सत्ताधारी बहुधा सौदागरों के विरोधी हो जाते थे, उनपर कर लगा देते थे, उन्हें धमकाते थे और उनका अपहरण भी कर लेते थे। उनके पास वित्तीय अधिकार होने के बावजूद, वे उन अधिकारियों के पहले शिकार बने जिन्हें स्थापित करने में उन्होंने मदद की थी।

सामान्य तौर पर चीनी प्रांतों में सौदागरों के अधिकार केंद्रीय और प्रांतीय सरकारों के नौकरशाही अधिकारों का स्थान नहीं ले सकते थे। वे बस इतना कर सकते थे कि विनाशकारी अराजकता को सीमित कर दें, जो शाही व्यवस्था का एक मात्र विकल्प दिखाई देता था।

शंघाई का बूर्जुआ वर्ग विश्व बंधुत्व में सबसे अधिक आस्था रखने वाला और सबसे अधिक आधुनिक था। उसने एक प्रभुत्वशाली राजनीतिक शक्ति बनने के लिए ज़ोर लगाया। उनकी इच्छा थी कि वे चीन के आंतरिक क्षेत्रों के साथ व्यापार बढ़ाए और तटवर्ती क्षेत्रों तक ही सीमित न रहें। इसलिए वे राष्ट्रीय एकता चाहते थे। शंघाई के बूर्जुआ वर्ग ने सन यात सेन के गणतंत्रीय कार्यक्रम को अपनाया और उसके आधुनिकीकरण के अभियान में शामिल हो गए। शंघाई के सौदागरों ने भारी ऋण देकर सन यात सेन को जनवरी 1, 1912 को नानकिंग में चीनी गणराज्य स्थापित करने में मदद की। पाँच वर्षों बाद घोषित अपने घोषणा-पत्र में सन यात सेन ने वचन दिया : "हम ...... अपनी वाणिज्यिक और उत्खनन संहिताओं को ...... संशोधित करेंगे, व्यापार और वाणिज्य पर लगे प्रतिबंध समाप्त करेंगे।" इनमें, सौदागरों के लाभ के कई उपायों की घोषणा की गई थी। लेकिन, नानकिंग सरकार केवल तीन महीने सत्ता में रही, इसलिए वह कुछ भी लागू नहीं कर पाई। बूर्जुआ वर्ग न तो सीधे-सीधे सत्ता हथिया पाए और न ही अपने प्रतिनिधि डॉ. सन यात सेन और उसके कुओमिंतांग के हाथ से सत्ता के जाने को रोक पाए। हाँ, उन्होंने अपनी शक्ति का आभास अवश्य करवा दिया। उन्होंने प्रांतों में व्यापार के सामान्य रूप से चलते रहते और कुछ अंश तक कानून और व्यवस्था बनाए रखने में मदद दी थी। नानकिंग सरकार को उनके समर्थन के कारण वह नहीं घट पाया जो नहीं घटना चाहिए था—अर्थात् मांचू वंश की वापसी। वे ऐसे राजनीतिक ढांचे नहीं खड़े कर पाए जो उनके अपने विकास के लिए आवश्यक थे। प्रांतों में उनका सामाजिक आधार इतना कमज़ोर था कि उनके लिए कुलीनों से अलग अपनी पहचान बनाना संभव नहीं था। वे चीन के उस

ग्रामीण समाज तक पहुँचने में असफल रहे जो शताब्दियों से एक नौकरशाही अधिकारवादी परंपरा का अभ्यस्त रहा था।

बोध प्रश्न 1

1) सही उत्तर ढूँढिए :

   i) चीनी बूर्जुआ वर्ग ने अपने आपको .... के बाद ही मज़बूत किया।

      क) सन् 1911 की क्रांति

      ख) प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत

      ग) कुओमिंतांग के गठन

      घ) लेनिन की मृत्यु

2) चीनी बूर्जुआ वर्ग का एक सामाजिक शक्ति के रूप में किस तरह उदय हुआ? लगभग 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) अपने संकुचित अर्थ में प्रयुक्त "बूर्जुआ" शब्द में .... आ जाते हैं।

   क) बुद्धिजीवी

   ख) सामाजिक कार्यकर्ता

   ग) उद्यमी

   घ) ज़मींदार

4) लगभग 5 पंक्तियों में चीन में सौदागर वर्ग की चर्चा करें।

....

....

....

....

....

29.6 युआन शिकाइ के काल में बूर्जुआ वर्ग

युआन शिकाइ के चीनी गणराज्य का राष्ट्रपति बनने के बाद, चीनी बूर्जुआ वर्ग के लिए अवनति का एक दौर प्रारंभ हुआ। कई महीनों की अव्यवस्था के बाद, व्यापारी वर्ग में शांति और सुरक्षा की वापसी के लिए चिंता हुई। कुछ संकोच के साथ युआन शिकाइ के साथ इन लोगों के खड़े होने से इस नए राजनीतिक समीकरण की शुरुआत हुई। क्रांतिकारी गणतंत्रवादियों के साथ उनके संबंध शिथिल पड़ने लगे। शंघाई में दुस्साहसी सेना ने जनरल चैम्बर ऑफ कॉमर्स पर उस समय गद्दारी का आरोप लगाया जब उनके सेनापति को अप्रैल 1912 में अंतर्राष्ट्रीय बस्ती में गिरफ्तार कर लिया गया। बूर्जुआ वर्ग का रुझान

नए और नरमपंथी राजनीतिक दलों की ओर हो गया, जिन्होंने मई 1912 में अपना पुनर्गठन करके रिपब्लिकन पार्टी बना ली। 1912-13 के राष्ट्रीय चुनावों में नरमपंथियों ने शंघाई में इस पार्टी का समर्थन किया। युआन शिकाइ ने सौदागरों को हर्जाना और आश्वासन दिये, उसने शंघाई के व्यापारी वर्ग के साथ नानकिंग सरकार के आनुबंधिक दायित्वों को मान्यता दी, और हानतो के उन सौदागरों को हर्जाना देने का वायदा किया, जिनकी दुकानें अक्तूबर, 1911 के विप्लव में नष्ट हो गई थीं। अक्तूबर, 1912 में, युआन ने बूर्जुआ वर्ग का समर्थन प्राप्त करने की गरज से कई सुधारों की भी घोषणा की। इन सुधारों में पारगमन कर पर रोक, निर्यात करों में कटौती, मुद्रा का एकीकरण, और औद्योगिक विकास की एक नीति शामिल थी।

सन् 1912 के प्रारंभिक कुछ महीनों की स्थिरता या जड़ता के बाद, जब व्यापार फिर चालू हो गया तो बूर्जुआ वर्ग राजनीतिक गतिविधि से अलग हो गए। भरपूर फसल और विश्व बाज़ार में चाँदी की कीमत बढ़ने के कारण, विदेश व्यापार में अपेक्षाकृत बेहतरी की स्थिति आई। यह संपन्नता उद्योग के क्षेत्र तक पहुँची। शंघाई में, 1912 में, नए संयंत्रों की विद्युत की मांग को पूरा करने के लिए औद्योगिक विद्युत की आपूर्ति को चार गुना बढ़ाना आवश्यक हो गया, ऐसा विशेषकर चावल मिलों के मामले में हुआ, जो काफी संख्या में बन रही थीं, और कपड़ा मिलों के मामले में, जो अपनी क्षमता बढ़ा रही थीं। इस काल में मिल-व्यापार में तेज़ी से वृद्धि हुई। कल-कारखानों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई। हांगयांग की जिन झोंका-भट्टियों को 1911 के विद्रोह के दौरान छोड़ दिया गया था, उन्हें पूरी तौर पर चीनी दलों ने फिर से चालू किया। उत्खनन उद्योग में पूर्वेक्षण और खान के कार्यों का विस्तार हो रहा था। शंघाई शहर की ट्रामपथ व्यवस्था के निर्माण की योजना बनाने और उसे पूरा करने का काम कुछ ही महीनों में बिना किसी बाहरी मदद के कर लिया गया। यह सारा काम कोई एक दर्जन प्रांतीय या राष्ट्रीय संगठनों ने किया, जिनका गठन 1912 के दौरान उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए किया गया था।

इस सुधरती स्थिति में व्यापारी वर्ग को सबसे अधिक भय इस बात का था कि कहीं सैनिक और राजनीतिक अव्यवस्था की स्थिति फिर से न बन जाए। मार्च 22, 1913 में सूंग च्याओ-जेन की हत्या से शंघाई के सौदागरों में मानसिक अशांति फैल गई। लेकिन वे युआन शिकाइ की गद्दारी से इतना परेशान नहीं हुए थे (यह सुविदित था कि हत्या की योजना उसी ने बनाई थी), जितना सन यात सेन की बैरपूर्ण प्रतिक्रिया से। समूची राजनीतिक स्थिति में अनिश्चितता के इस दौर में, बूर्जुआ वर्ग को एक नए संकट के उभरने का भय था, जिससे सुधरा हुआ वातावरण बिगड़ सकता था। क्रांतिकारी प्रयोग से निराशा, एक व्यवस्थित शासन के आकर्षण और आर्थिक विस्तार से जगी नई आशाएँ, इन सबने मिलकर उन्हें एक कपटपूर्ण तटस्थता अपनाने को बाध्य कर दिया। 1913 के ग्रीष्म के संकट ने उन्हें अपना मन बना लेने को विवश कर दिया।

जब युआन और सन यात सेन के बीच संघर्ष हुआ तो, दक्षिणी प्रांतों के सैनिक नेताओं ने स्वाधीनता की घोषणा कर दी। विद्रोही सेना सड़कों पर आ गई तो शंघाई को भी आंदोलन में आना पड़ा। सौदागर विद्रोहियों के साथ खुली शत्रुता और उनके अपने हितों के लिए आवश्यक अवसरवाद के विकल्पों के बीच झूलते रहे। जनरल चैम्बर ऑफ कॉमर्स ने स्वाधीनता की घोषणा का समर्थन करने या विद्रोही सेनापति के मांगे धन की आपूर्ति करने से इंकार कर दिया। उन्होंने यह घोषणा कर दी कि शंघाई को लड़ाई का मैदान नहीं बनने दिया जाएगा।

कैंटन में, जुलाई 21 को शहर की स्वाधीनता की घोषणा करने वाले राज्यपाल को सौदागर या तो विरुद्ध मिले या निष्क्रिय। यांगज़ी नदी के सभी प्रमुख बंदरगाहों में, सौदागरों ने वही सतर्कता, वही छिपी शत्रुता या विरोध का रवैया दिखाया। न्यूनाधिक सफलता के साथ स्थानीय चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स (व्यापार मंडलों) ने अपनी शक्ति को अपने शहर को बचाए रखने, विद्रोही सिपाहियों को घूस देकर वहां से चले जाने को तैयार करने और उत्तरवासियों की शांतिपूर्ण वापसी के लिए रास्ता तैयार करने में लगा दिया। नानकिंग में जहाँ सौदागरों ने दक्षिणवासियों को बहुत अधिक धन दिया था, ये प्रयास व्यर्थ गए, अब उन्हें उत्तरी सेना के प्रवेश और उसके बाद सितम्बर 13, 1913 के दौरान हुई लूटमार में अपनी बर्बादी दिखाई दी। 1913 की इस "दूसरी क्रांति" के प्रति बूर्जुआ वर्ग का विरोधपूर्ण रवैया केवल बहुत ही सतर्कतापूर्ण ढंग में ही व्यक्त हुआ, विशेषकर उन प्रांतों में जिन्होंने स्वाधीनता की घोषणा कर दी थी। व्यापार मंडलों ने स्पष्ट तौर पर कोई विरोध नहीं जताया, उन्होंने बहुत अधिक दबाव न पड़ने की स्थिति में बस अपनी ओर से आर्थिक सहयोग देने से इंकार

कर दिया। कुछ भी हो, संघर्ष का परिणाम मुख्य तौर पर सैनिक नेताओं, और उनकी सेना की योग्यता और संख्या पर निर्भर रहा। यहाँ युआन शिकाइ की श्रेष्ठता लगभग प्रारंभ से ही स्पष्ट थी। बूर्जुआ वर्ग के इस कथित विरोध या पृथकता का 1913 में कोई निर्णायक महत्व नहीं था। व्यावहारिक दृष्टि से बूर्जुआ वर्ग एक दूसरे दर्जे की शक्ति भर रहे।

सन् 1913 का विद्रोह विफल होने से भारी कर लगे और दुकानें नष्ट हुईं। इससे बूर्जुआ वर्ग को अपने अल्पकालीन हितों की रक्षा को बाध्य होना पड़ा। युआन शिकाइ ने सौदागरों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी पारंपरिक सामाजिक पृथकता और राजनीतिक निष्क्रियता वाली स्थिति में आ जाएं। जीत जाने के बाद, उसने क्रांतिकारी विपक्ष को समाप्त करने के लिए क्रांतिकारी विपक्षी नेताओं को देश-निकाले को विवश कर दिया और पहले नवम्बर, 1913 में कुओमिंतांग और फिर उसी वर्ष दिसम्बर में संसद को भंग करने के आदेश जारी किए। उसने 1911 के पहले और बाद में स्थानीय कुलीनों के लाभ के लिए निचले स्तर पर गठित तमाम प्रतिनिधि संस्थाओं पर भी प्रहार किया। फरवरी, 1914 में उसने प्रांतीय और स्थानीय सभाओं को समाप्त कर दिया, जिन्हें 1912-13 के जाड़ों में एक अत्यधिक परिवर्धित मतदाता-समूह अर्थात् वयस्क पुरुषों की जनसंख्या के लगभग 25 प्रतिशत, के आधार पर अभी पुनर्जीवित किया ही गया था। क्रांति के बाद से इन स्थानीय सभाओं ने अनेक प्रशासनिक, वित्तीय और सैनिक कामों को अपने हाथों में ले लिया, जो आम तौर पर राज्य की नौकरशाही के लिए आरक्षित थे।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने उस समय बड़ी तादाद में विकसित होने वाले उद्योगपतियों, शिक्षकों, दस्तकारों और महिलाओं के संगठनों के लिए मंचों और प्रवक्ताओं का काम किया। इन संगठनों के माध्यम से समाज का एक पूरा वर्ग राष्ट्र की राजनीतिक जीवन-धारा में शामिल हो गया, जिसमें कुलीन, बुद्धिजीवी और छोटे सौदागर थे। ये सभाएँ चीनी की राजनीतिक परंपरा में मुक्ति के एक अंश का प्रतीक थीं। पहली बार लोगों को स्थानीय हितों और सामाजिक समूहों या वर्गों का बचाव देखने को मिला जिन्हें पहले के शासक वर्गों ने बंद या अनदेखा कर रखा था। इस तरह, युआन के दृष्टिकोण से वे उसकी अपनी व्यक्तिगत शक्ति और राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने की राह में खतरे का प्रतीक थे, जिसकी बराबरी वह एक मज़बूत प्रशासनिक केंद्रीकरण से करता था।

शंघाई के सौदागरों के लिए यह एक असाधारण अनुभव का अंत था। इस चीनी शहर की नगरपालिका में, शहरी कुलीन वर्ग अपनी प्रबंधन की क्षमता, आधुनिकीकरण के रूझान, जनतांत्रिक प्रक्रियाओं की अपनी क्षतिपूर्ति और प्रमुख राष्ट्रीय समस्याओं में अपनी रुचि का प्रमाण देने में सफल रहा था। शंघाई के व्यापारी हलकों को फिर कभी यह स्थानीय प्रशासन और राजनीतिक स्वायत्तता नहीं मिली। युआन ने पहले की नगर पालिका के स्थान पर लोक निर्माण, पुलिस और करों का जो तंत्र बनाया था वह कट्टर तौर पर स्थानीय अधिकारियों के अधीन बना रहा। 1914 में पारित एक कानून ने व्यापार मंडलों पर सरकारी नियंत्रण को मज़बूत कर दिया, जिससे सरकार व्यापारी समुदाय को उनकी राजनीतिक अभिव्यक्ति के साधन से वंचित करने में कामयाब रही। पहल से वंचित हो जाने पर, सौदागरों की उन महान आदर्शों में रुचि समाप्त होने लगी जिनसे उन्हें शताब्दी के प्रारंभ से ही प्रेरणा मिलती रही थी। उन्होंने चीन में स्वयं आधुनिकीकरण का जो अभियान चलाया था उसे देश-व्यापी स्वीकृति न मिल पाने की स्थिति में, वे अपने अल्पकालिक हितों की रक्षा में लग गए। एक सैनिक-नौकरशाही शासन के मुकाबले में होने के नाते, उन्होंने विदेशियों की उपस्थिति के साये में अपने भौगोलिक और सामाजिक आधार की स्वायत्तता को मज़बूत करने का प्रयास किया। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय बस्ती में उन्होंने बहुधा विदेशी पुलिस से सुरक्षा की मांग की।

युआन शिकाइ के राष्ट्रपतित्व में एक नया तत्व विशेष था, वह था व्यापारिक विधान को पूरा करके, वित्तीय और आर्थिक व्यवस्था को स्थिर करके, और निजी उद्यम को प्रोत्साहित करके आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने का संकल्प। कृषि एवं व्यापार मंत्री ने व्यापारिक उद्यम और निगमों के पंजीकरण, और निगम स्थापनाओं पर कानून पारित करवाए, उसने कपास और गन्ने की खेती के लिए नमूना केंद्र स्थापित किए और बांट और माप के मानकीकरण की योजना बनाई। फरवरी, 1914 में युआन शिकाइ डालर की स्थापना की गई, जो आर्थिक एकीकरण की दिशा में पहला कदम था। व्यापार को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने की यह इच्छा सभी बूर्जुआ वर्ग को कोई भी अधिकार देने से इंकार करने के बहुत विपरीत थी। इस संदर्भ में युआन नौकरशाही के आधुनिकीकरण की ओर लौटा, जिसका वह स्वयं चिंग वंश के अंतिम वर्षों में एक प्रबल समर्थक और प्रतिनिधि रहा था। युआन अब एक तानाशाह था, उसकी सत्ता का आधार सेना और मन्दारिनों में था। उसे

सौदागरों को फुसलाने की क्या आवश्यकता थी? इसलिए उसकी आर्थिक नीतियों में बूर्जुआ वर्ग का समर्थन करने, उन्हें सहारा देने, के किसी वचन की तलाश करना सही न होगा। युआन के शासन के कोई चार वर्षों में संधिगत बंदरगाहों वाले क्षेत्रों को मिली संपन्नता का श्रेय इसे देना भी गलत होगा। वास्तव में, प्रथम विश्व युद्ध के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में जो बदलाव आया वही वह निर्णायक शक्ति थी जिसने चीन के उभरते नए वर्ग को उसके कथित "स्वर्णिम युग" में पहुँचाया।

29.7 बूर्जुआ वर्ग : 1916-1919

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के प्रारंभ में, चीन में व्यापारियों की एक नई पीढ़ी के उदय के साथ, राष्ट्रीय पूंजीवाद पूरे ज़ोर पर था। व्यापारियों की यह पीढ़ी औद्योगिक उत्पादन और वेतनभोगी कर्मचारी दल के शोषण से सीधे-सीधे जुड़ी थी। शहरी अर्थव्यवस्था में इस उछाल का कारण वह क्रांति नहीं थी, जिसे सैन्यवादियों ने अपने हाथों में ले लिया था, बल्कि वह आर्थिक चमत्कार था, जो प्रथम विश्व युद्ध के कारण हुआ था।

उन्नीसवीं शताब्दी की असमान संधियों ने चीनी बाज़ार को जिस सुरक्षा से वंचित कर दिया था, उसका एक अंश युद्ध के कारण उसे वापस मिल गया। युद्धरत ताकतें अपनी ही कलह में इतनी उलझी थीं कि उन्होंने चीन की ओर से मुंह फेर लिया। चीनी व्यापार से यूरोपीय ताकतों के हट जाने से उनका स्थान लेने वाले राष्ट्रीय उद्योगों के लिए अनुकूल स्थिति अवश्य बनी, लेकिन इसने जापानी और अमेरिकी हितों के विस्तार को भी प्रोत्साहित किया, जो बाद के वर्षों में अपना समय आने पर बड़े टकरावों के स्रोत बने।

युद्ध के कारण विश्व में अलौह धातुओं और वनस्पति तेलों जैसे प्राथमिक उत्पादनों और नई सामग्रियों की मांग बढ़ गई। प्राथमिक उत्पादनों का प्रमुख वितरण होने के नाते, चीन इस मांग को पूरा करने की अच्छी स्थिति में था। इसके अतिरिक्त, पश्चिमी ताकतों के चाँदी की मुद्रा वाले, चीन और भारत जैसे देशों में खरीद में वृद्धि होने से चाँदी की अंतर्राष्ट्रीय कीमत में वृद्धि की स्थिति बनी। इस तरह, ताएल एक सुदृढ़ मुद्रा बन गई। कुछ ही वर्षों में विश्व बाज़ार में इसकी क्रय (खरीद) शक्ति तिगुनी हो गई। विदेशी ऋणों का भार कम हो गया, जिससे शोचनीय चीनी अर्थव्यवस्था को कुछ राहत मिली, लेकिन आयात और विशेषकर औद्योगिक उपकरणों के आयात सुगम नहीं हुए। इसका कारण सीधा-साधा था कि यदि विश्व युद्ध ने चीनी अर्थव्यवस्था को विकास के अवसर दिए थे तो, इन अवसरों को प्राप्त कर इनका लाभ केवल एक ऐसी अविकसित अर्थव्यवस्था के संकुचित ढांचे में उठाया जा सकता था, जो एक पंगु अर्ध-उपनिवेशीय व्यवस्था की गतिशीलता पर निर्भर थी।

युद्धरत राज्यों को व्यापारिक बेड़ों की आवश्यकता होने, विश्व व्यापार में कमी होने, और उसके परिणामस्वरूप भाड़ों में वृद्धि होने के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अवरुद्ध हो गया। विनिमय संबंधी नियंत्रणों, और 1917 में फ्रांस और इंग्लैंड के रेशम और चाय पर रोक लगा देने से चीनी उत्पादनों की निकासी के परंपरागत मार्ग छिन गए। और, यूरोपीय ताकतों के युद्ध-उद्योगों को प्राथमिकता देने का चीन को उपकरण की आपूर्ति पर उलटा प्रभाव पड़ा। ऐसे समय में, जबकि विदेशी होड़ कम होने से राष्ट्रीय उद्योगों में उछाल आ रहा था, इन उद्योगों के लिए आवश्यक मशीनरी प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया। प्रथम विश्व युद्ध तक चीन विकास के उस स्तर पर नहीं पहुँचा था कि वह विदेशी ताकतों की उद्योगों से अपेक्षाकृत वापसी का पूरा लाभ उठा पाता। विश्व युद्ध से जो कठिनाइयाँ सामने आयीं उनमें वास्तविक घाटे नहीं, बल्कि लाभ की कमी शामिल थी। चीनी अर्थव्यवस्था के आधुनिक क्षेत्र के लिए युद्ध के वर्ष सम्पन्नता का दौर थे। शांति की बहाली के बाद जाकर ही व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए "स्वर्णिम युग" आया।

वर्ष 1919 में चीनी अर्थव्यवस्था का आधुनिक क्षेत्र विश्व युद्ध और बहाल शांति के लाभ उठाने लगा। प्राथमिक उत्पादनों की मांग में तेज़ी आ गई। युद्ध की आवश्यकताओं का स्थान पुनर्निर्माण की आवश्यकताएँ ले रही थीं। शंघाई में, 1913 में, निर्यातों का मूल्य पिछले वर्ष की अपेक्षा 30 प्रतिशत अधिक था। निर्यातों में उछाल और भी उल्लेखनीय रही, क्योंकि चाँदी का मूल्य लगातार बढ़ता रहा और इसके साथ-साथ ताएल की विनिमय दर भी। यूरोपीय खरीदारों की आवश्यकता इतनी अधिक थी कि वे ऊँची कीमतें देने को तैयार थे। जहाज़ी माल की और अधिक उपलब्धता और युद्ध-उद्योगों के फिर से परिवर्तन

के कारण चीनी उद्योगपतियों के लिए अपनी आपूर्तियों के लिए पश्चिमी बाज़ारों को लौटाना संभव हुआ। केवल एक वर्ष में, 1918 से 1919 तक, उदाहरण के लिए, उनकी वस्त्र सामग्री की खरीद 18 लाख ताएल से बढ़कर 39 लाख ताएल हो गई।

सन् 1917 तक एक मामूली विस्तार के बाद, विदेशी व्यापार का मूल्य 1918 में 10,400 लाख ताएल से बढ़कर 1923 में 16,700 ताएल हो गया। प्रगति का पैमाना निर्यातों की वृद्धि और विविधता हो गई। आयातों में कम तेज़ी से वृद्धि हुई, लेकिन उन्हें काफी पुनर्संरचना से गुजरना पड़ा। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता उत्पादनों, विशेषकर सूती सामग्रियों में, जिनके निर्माण का विकास चीन में हो रहा था, (वाहनों, फर्नीचर आदि जैसे, टिकाऊ सामान के पक्ष में गिरावट आई। आयातों और निर्यातों में वृद्धि की इस असमानत ने व्यापार संतुलन की बहाली में योगदान किया। 1919 में घाटा केवल एक करोड़ 60 लाख ताएल से अधिक नहीं गया। चीनी विदेशी व्यापार का स्वरूप एक ''अविकसित'' अर्थव्यवस्था का रहा, लेकिन यह व्यापार अब एक आश्रित अर्थव्यवस्था का व्यापार नहीं रह गया था, बल्कि इसका संबंध एक आधुनिक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि के पहले चरण से था।

बाज़ार में मांग बढ़ने के कारण, स्वदेशी और विदेशी दोनों उत्पादनों में वृद्धि हुई। परंपरागत और आधुनिक, दोनों क्षेत्र नई आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे। 1919 तक आधुनिक उद्योगों के उछाल को रोकने या अवरुद्ध करने के लिए उत्तरदायी जहाज़ी माल और उपकरण की कमी ने दस्तकारी क्षेत्र को प्रभावित नहीं किया था। 1915-16 से लेकर करघों की संख्या उत्तरी और मध्यवर्ती प्रांतों में बढ़ रही थी। उत्पादन की खपत स्वदेशी बाज़ार में थी। शहरी कार्यशालाएँ स्थापित की गईं और व्यापारिक पूंजीवाद प्रमुख शहरी केंद्रों के पास के समूचे ग्रामीण क्षेत्र में फैल गया। बुनाई, तैयार वस्त्र, होजियरी, कांच का सामान, माचिस और तेल उत्पादन में केवल उत्पादन के पुराने तरीकों की वापसी शामिल नहीं थी। बल्कि इस दस्तकारी उद्योग में बहुधा उन्नत तकनीकों और औद्योगिक मूल के कच्चे माल (धागे, रासायनिक उत्पादन) का उपयोग होता था, और जिसे हम एक ''संक्रमणकालीन'' आधुनिकीकरण कह सकते हैं, उसे अपनाने का प्रयास होता था।

तटवर्ती शहरों में आधुनिक व्यापार की उछाल एक अपेक्षाकृत सामान्य विस्तार के केवल एक पक्ष को बताती है, वैसे यह बेशक सबसे उल्लेखनीय पक्ष है। 1912 से 1920 तक आधुनिक उद्योगों की वृद्धि दर 13.8 प्रतिशत तक पहुँच गई थी। इसका प्रमुख उदाहरण सूती धागा था। खाद्य उद्योगों में भी उछाल आया, जैसा कि कई आटा मिलों के खुलने और विदेशी स्वामित्व वाली तेल मिलों की फिर से खरीद होने से स्पष्ट होता है, लेकिन यह वृद्धि और विकास भारी उद्योगों तक नहीं पहुँच पाया। दक्षिणी प्रांतों में अलौह धातुओं (विशेषकर सुरमा और रांगा) के दोहन की अप्रत्याशित संपन्नता का आधार विशुद्ध रूप से अंतर्राष्ट्रीय सट्टेबाजी थी, और यह उसी के साथ गायब भी हो गई। आधुनिक कोयला और लौह खानें 75 से 100 प्रतिशत तक विदेशी हितों के नियंत्रण में रहीं। सबसे उल्लेखनीय प्रगति मशीन-निर्माण उद्योग में हुई। शंघाई और उसके आसपास के क्षेत्रों को इस विस्तार का मुख्य रूप से लाभ मिला, इसका प्रभाव त्येनसिन और कुछ कम अंश में कैंटन और वूहानं पर भी पड़ा।

इस समूचे वृद्धि काल में व्यापार और उत्पादन की वृद्धि को साख बढ़ने ने संभाला और कीमतों और मुनाफा बढ़ने ने बढ़ावा दिया। विदेशी व्यापार में बाधा डालने वाले विदेशी बैंकों की स्थिति में गिरावट आने से स्थानीय बाज़ार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि उनका वित्त प्रबंध हमेशा चीनी नियंत्रण में रहा। इसके विपरीत, इस स्थानीय या स्वदेशी बाज़ार ने महत्वपूर्ण संसाधनों को राष्ट्रीय व्यापार के लिए उपलब्ध कराया। उसने इस दिशा में सामंतों और कम्प्रेडरों की पूंजी को उपलब्ध कराया, जो अब तक सुरक्षा या ब्याज के कारण मुख्य रूप से विदेशी कार्यकलापों में ही पूंजी लगाते रहे थे। आधुनिक चीनी बैंकों का उदय प्रथम विश्व युद्ध से होता है। केवल वर्ष 1918 और 1919 में ही 96 नए बैंक खोले गए थे। वैसे, इनमें से अधिकांश बैंकों के घनिष्ठ संबंध लोक अधिकारियों से थे। ऐसा चीन के सरकारी बैंक और बैंक ऑफ कम्यूनिकेशन के साथ, कुछ दर्जन प्रांतीय बैंकों के साथ, और अनेक अन्य राजनीतिक बैंकों के साथ था, जिनके संस्थापक सरकारी हलकों से थे या उनके उच्च अधिकारियों के साथ घनिष्ठ संबंध थे। इन तमाम प्रतिष्ठानों की गतिविधि राज्य कोशों और ऋणों की देखभाल तक सीमित थी। कोई एक दर्जन आधुनिक बैंकों का संचालन विशुद्ध रूप से व्यापारिक स्तर पर हो रहा था। इनमें से अधिकांश बैंक शंघाई में थे। राष्ट्रीय व्यापार को वित्त देने में उनकी भागीदारी में बाज़ार का प्राचीन, अप्रासंगिक ढांचा बाधा बना रहा।

व्यापार को वित्त देने के लिए, आधुनिक बैंकों को इस तरह पुराने ढंग के बैंकों की तरह ही ऋण देने का सहारा लेना पड़ता। फिर भी, आधुनिक बैंक अपने ग्राहकों से संपत्ति गिरवी रखने या सामान जमा कराने के रूप में गारंटी या जमानतें मांगते थे। इससे उन्हें पुराने ढंग की बैंकों की तुलना में हानि हुई, क्योंकि पुराने ढंग के बैंक परंपरागत नियमों पर चलते थे, जिनका आधार व्यक्तिगत संबंध थे, और ये बैंक "भरोसे पर" ऋण देते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि आधुनिक बैंकिंग क्षेत्र का आकार विशाल होने के बावजूद, असली व्यापारिक बैंक पुराने ढंग के बैंक ही रहे।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान थोक कीमतें 20 प्रतिशत से 44 प्रतिशत तक बढ़ गईं। बढ़ती औद्योगिक कीमतों की तुलना में कृषि उत्पादनों की कीमतों में स्थिरता थी। परंपरागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था में यह स्थिरता ग्रामीण समाज के अपेक्षाकृत संतुलन का संकेत थी। कृषि उत्पादनों की कीमतों में स्थिरता और औद्योगिक कीमतों में वृद्धि संपन्नता के चिन्ह थे। इस संपन्नता का सबसे अधिक लाभ व्यापारिक क्षेत्र को मिला। सबसे महत्वपूर्ण कंपनियों ने अपने मुनाफे बीस गुना तक, और कुछ ने तो पचास गुना तक बढ़ा दिए। लाभांश 30 से 40 प्रतिशत तक पहुँच गए, और कुछ जगह तो 90 प्रतिशत तक। व्यापारियों को होने वाले लाभ इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि वे अपने लाभों का साझा अपने कर्मचारियों के साथ कभी नहीं करते थे। दस्तकारों का वेतन और मज़दूरों की दिहाड़ी कैंटन में केवल 6.9 प्रतिशत बढ़ी, और शंघाई में 10 से 20 प्रतिशत। इस भौतिक संपन्नता ने चीन के तटवर्ती क्षेत्रों में नए सामाजिक वर्ग के गठन में मदद की। यह एक शहरी, उच्च मध्यम वर्ग था, जो पश्चिमी प्रभावों के प्रति अत्यधिक उन्मुक्त था।

29.8 शहरी समाज का उदय

आर्थिक वृद्धि के कारण तेजी से शहरीकरण हुआ। शहरी आबादी की वार्षिक वृद्धि दर कुल आबादी की वृद्धि दर से बहुत अधिक ऊँची थी। यह स्थिति शंघाई में विशेष कर स्पष्ट थी, जहाँ दस वर्षों में चीनी आबादी तिगुनी हो गई। त्येन सिन और ज़िंगताओ जैसे दूसरे संधिगत बंदरगाहों में भी आबादी में वृद्धि हुई।

आंतरिक शहरों में विस्तार तेजी से लेकिन कम उल्लेखनीय रहा। उदाहरण के लिए, ज़िनान में 1914-19 के बीच वृद्धि दर तीन प्रतिशत रही, जबकि समूचे प्रांत की आबादी की वृद्धि दर केवल एक प्रतिशत रही। इस तेज शहरीकरण का कारण न तो अकाल ही था और न ही नागरिक अशांति का बढ़ना, क्योंकि इस दौर में ये स्थितियाँ नहीं बनीं थीं। इसका बुनियादी कारण ग्रामीण समाज का विकास के नए केंद्रों के प्रति आकर्षण था। गांवों में जिनके पास जीविका का साधन नहीं था, ऐसे गरीब किसान कसबों और शहरों में आजीविका की तलाश में आए। उन्होंने मिलों और कार्यशालाओं या कारखानों में काम ढूंढा। ये बंदरगाहों में सामान ढोने वाले, कुली और रिक्शा-चालक बन गए। अनेक संपन्न ग्रामीण भी शहरों, विशेषकर प्रांतों की राजधानियों में स्थानीय प्रशासन या स्वायत्तशासी संगठनों में नौकरी की संभावनाएँ टटोलने आ गए। दूसरों ने शहरी जीवन को इसलिए चुना क्योंकि यहाँ उनके बच्चों के लिए आधुनिक शिक्षा की गारंटी थी, जोकि अपने आप में एक अत्यधिक वांछित विशेषाधिकार था।

शहरी क्षेत्र का भौगोलिक विस्तार हुआ। उपनगरों ने पुराने शहर की दीवारों के फाटकों से होकर शहर के मध्य भाग से संपर्क बनाना शुरू कर दिया। कैंटन और चांगशा समेत अनेक शहरों में नए आवासों का निर्माण सुलभ करने के लिए शहर की दीवारों को गिरा दिया गया। (चीन में, प्राचीन समय से ही शहरों को दीवारों से घेरकर रखा जाता था) अधिकांश नए निर्माण आवास के लिए हुए, लेकिन भव्य व्यापारिक इमारतें भी बनीं। अनेक दुकानें, डिपार्टमेंटल स्टोर और मंडियां भी बनकर तैयार हुईं। कार्यशालाएँ, गोदाम और भंडारगृह इस सीमा तक बने कि नगरपालिका द्वारा अधिकृत निर्माण का मूल्य 1915 और 1920 के बीच 20 लाख ताएल से एक करोड़ 10 लाख ताएल तक बढ़ गया।

इन विकसित होते शहरी केंद्रों में आबादी बढ़ती चली गई और सामाजिक वर्गीकरण और भी जटिल और स्पष्ट हो गए। आधुनिक बूर्जुआ वर्ग और मज़दूर सर्वहारा वर्ग का उदय हुआ और शहरी कुलीनों में एक वर्ग की पहचान आधुनिक बुद्धिजीवी के रूप में बन गई। सामान्य दृष्टिकोण से, चीनी समाज में होने वाले ये बदलाव गौण रहे, क्योंकि इन्होंने चीन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन पर कोई गहरा असर नहीं डाला। जो शहरी

बूर्जुआ वर्ग उभरे उन्होंने अपने आपको उन आर्थिक; सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में लगाया जो ग्रामीण कुलीनों की गतिविधियों से बहुत भिन्न थीं; लेकिन वे भू-संपत्ति में अपने हित और लोक अधिकारियों के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों, दोनों के माध्यम से पुराने शासन के ढांचों से जुड़े रहे। 1911 की क्रांति ने उन्हें प्रसिद्धि और महत्ता दी थी। उनके नेता हमेशा अग्रिम पंक्ति में रहे। औद्योगीकरण के प्रणेताओं की आर्थिक सफलता का कारण असाधारण व्यक्तिगत गुण थे, जिनमें से अधिकांश उन्होंने संधिगत बंदरगाहों में विदेशियों के साथ अपने संपर्कों से प्राप्त किए थे। इन्हीं के कारण वे आधुनिक प्रौद्योगिकी और प्रबंध के महत्व को भी समझ पाए थे।

लेकिन, अधिकांश शहरी कुलीनों की अपनी अलग पहचान उनके राजनीतिक रुझान और सामाजिक भूमिका के कारण अधिक बनी, आधुनिक व्यापार में उनकी भागीदारी के कारण कम। 1911 के बाद, नौकरशाही संस्थाओं को नए अधिकारी तंत्र ने अपने हाथों में ले लिया। यह अधिकारी तंत्र उस संगठन की देन था, जिसमें प्रांतीय सभाओं, व्यापार मंडलों, शैक्षिक और कृषि संगठनों जैसे स्थानीय हितों का प्रतिनिधित्व था। यह सही है कि इसका टकराव युआन शिकाइ के केंद्रीकरण के प्रयासों, और क्षेत्रीय स्तर पर सैन्यवादियों की विरोधी महत्वाकांक्षाओं से हुआ। फिर भी, शहरी कुलीनों की शक्ति में बढ़ोत्तरी हुई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि नौकर तंत्र की नियुक्ति स्थानीय स्तर पर की जा रही थी। शहरी कुलीन वर्ग लोक अधिकारियों के हस्तक्षेप से, विदेशियों के अतिक्रमण से, और बाशिंदों के दावों से, अपने हितों की रक्षा करने में कामयाब रहा। इस तरह पुराने शासन का यह बूर्जुआ वर्ग चीनी समाज में एक स्थायी शक्ति के रूप में उभरा।

इस शहरी कुलीन वर्ग से न केवल वह व्यापारी वर्ग उभरा, जो औद्योगिक वृद्धि, उन्मुक्त उद्यम और आर्थिक तर्कसंगतता के प्रति प्रतिबद्ध था, बल्कि एक ऐसा आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग भी उभरा, जो उसी समय साथ-साथ आकार ले रहा था। ज़ाई युआन पे, हू शी और चेन तू शू जैसे व्यक्ति इसी कोटि के थे। उनकी अधिकांश शिक्षा विदेशों में हुई थी। अनेक व्यापारियों की तरह ही, वे भी युद्ध छिड़ने पर नए कौशल विचार और देशभक्तिपूर्ण उत्साह लेकर चीन लौटे थे। वे भी पुराने समाज से दूर हो गए थे और उन्होंने भी उन बंधनों को तोड़ दिया था, जिसके ज़रिए राज्य ने साहित्यकारों में से अधिकारी बना दिए थे और राजनीति को रूढ़िवादिता से जोड़ दिया था। साथ ही, उन्होंने व्यक्तित्व के लिए सम्मान पर आधारित एक नए स्वरूप की शिक्षा का भी प्रचार किया। इस बुद्धिजीवी वर्ग की उपस्थिति से नए बूर्जुआ वर्ग को काफी राहत मिली। इन दोनों वर्गों की एकजुटता से दोनों ही वर्ग मज़बूत हुए। शिक्षा को सुगम बनाने वाली कई परियोजनाओं की स्थापना व्यापारियों ने की। इसके बदले में बुद्धिजीवियों ने होनहार व्यापारियों को तकनीकी, प्रबंधन संबंधी और सामान्य शिक्षा प्रदान की। शिक्षा और तकनीकी कौशल और आधुनिक शिक्षा के बिना बूर्जुआ वर्ग अपना विस्तार नहीं कर सकते थे।

इसलिए, जब 1919 की चार मई की घटना के बाद से चार मई का आंदोलन तमाम चीनी शहरों में फैला तो सौदागर वर्ग और नए व्यापारी समुदाय ने उन छात्रों और बुद्धिजीवियों का साथ दिया, जो इस आंदोलन के मशाल वाहक या नेता थे। ये दोनों वर्ग राष्ट्रभक्ति से प्रेरित थे और वे जापानी साम्राज्यवाद और चीनी सरकार में जापानी साम्राज्यवाद के पिट्ठुओं के विरोध में एक दूसरे के और भी निकट आ गए। बुनियादी तौर पर क्योंकि दोनों ही वर्गों की पृष्ठभूमि एक ही थी, इसलिए उनका आपसी सहयोग और भी सुदृढ़ हुआ।

बोध प्रश्न 2

सही उत्तर बताइए :

1) अठारहवीं शताब्दी से चीन में शहरीकरण का कारण क्या रहा?

   क) राष्ट्रवाद

   ख) व्यापार

   ग) जलवायु में परिवर्तन

   घ) जनसंख्यात्मक परिवर्तन

2) उद्योगों और बूर्जुआ गतिविधियों में वृद्धि चीन के किस शहर में सबसे अधिक हुई?

   क) पीकिंग

   ख) नानकिंग

ग) शंघाई

घ) तराई

3) चीन में हुए शहरीकरण पर लगभग 10 पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

29.9 सारांश

चीन में विदेशी पूंजी निवेश की प्रकृति सीमित होते हुए भी, उसका प्रभाव औद्योगीकरण पर पड़ा। विदेशी पूंजी अधिकतर संधिगत बंदरगाहों के क्षेत्रों में लगी थी और इन्हीं स्थानों में और उनके आसपास के क्षेत्रों में नए चीनी बूर्जुआ वर्ग का उदय हुआ।

साम्राज्यिक चीन में सौदागर वैधानिक अयोग्यताओं और सामाजिक स्थिति का अभाव, इन दोनों के शिकार रहे थे। यहां तक कि अत्यधिक संपन्न सौदागरों की स्थिति भी भयानक थी, क्योंकि उनकी संपत्ति किसी भी समय जब्त की जा सकती थी। स्थितियों को अपने पक्ष में रखने के लिए सौदागर वर्ग को हमेशा अधिकारियों के साथ व्यक्तिगत मित्रता बनाने का प्रयास करना पड़ता था। वे बहुधा अपने पुत्रों को इसलिए शिक्षा दिलाते थे कि वे लोक सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करें और कुलीन वर्ग का हिस्सा बन जाएं। इससे एक मज़बूत, स्वाधीन सौदागर समुदाय सामने आया। संधिगत बंदरगाहों के मुक्त होने से सौदागरों को नए अवसर मिले। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में कुलीन वर्ग की स्थिति लोक सेवा परीक्षा समाप्त कर दिएं जाने के कारण विशेषकर नष्ट हो गई, जिससे, पहले कि कुलीन वर्ग को व्यापार में नए अवसर दिखाई पड़े। सौदागर वर्ग और कुलीन वर्ग के विलय से एक नया वर्ग, बूर्जुआ वर्ग, उभर कर सामने आया।

सन् 1911 की क्रांति म बूर्जुआ वर्ग की भूमिका महत्वपूर्ण, लेकिन हमेशा दोहरी रही। उन्होंने आवश्यक रूप से क्रांतिकारियों की विचारधारा के समर्थक न होते हुए भी उनका आर्थिक दृष्टि से साथ दिया। क्रांति के बाद के पहले दो वर्षों में, शासक बूर्जुआ वर्ग कानून और व्यवस्था के रख-रखाव को लेकर अत्यधिक चिंतित रहा, क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि उनका व्यापार हानिकर ढंग से प्रभावित हो। पहले, युआन शिकाइ ने सौदागरों को रियायतें दीं और उन्हें हर्जाना देने का वचन दिया, जिन्हें व्यापार में 1911 की घटनाओं के कारण हानि हुई थी। लेकिन वह कानून-व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति, और एक अस्थिर और अविवेकी राजनीतिक व्यवस्था के भय को कभी दूर नहीं कर पाया। अपने व्यापार को चालू रखने की खातिर उन्हें युआन को स्वीकृति देनी ही पड़ी, क्योंकि उसकी सैनिक शक्ति 1913 के सत्ता संघर्षों में महत्वपूर्ण रही थी। जैसे ही युआन को सैनिक तौर पर अपने शत्रुओं को समाप्त कर अपनी शक्ति मजबूत करने में कामयाबी मिली, उसने नई बनी उन प्रतिनिधि संस्थाओं को नष्ट करना शुरू कर दिया, जो अनेक औद्योगिक और अन्य संगठनों के लिए मंच का काम कर रही थीं।

बूर्जुआ वर्ग की वृद्धि को प्रोत्साहन देने वाला प्रथम विश्व युद्ध था। विदशी होड़ कम हुई तो, चीनी उद्यमियों ने नए उद्यमों को अपने हाथों में ले लिया। कपड़ा मिलों, चीनी मिलों, आदि का तेजी से विस्तार हुआ। प्राथमिक उत्पादनों और दूसरे कच्चे मालों की मांग बढ़ [illegible] चीनियों को वास्तव में औद्योगिक दृष्टि से उन्नत होने में

मदद नहीं की क्योंकि अर्ध-उपनिवेशीय अर्थव्यवस्था उस भारी मशीनरी का आयात करने में सक्षम नहीं थीं। जिसके जरिए व्यापक स्तर पर औद्योगीकरण को सुगम किया जा सकता था।

व्यापार और समृद्धि में वृद्धि के साथ, शहरीकरण भी हुआ। शहरों की आबादी बढ़ी। बूर्जुआ वर्ग और मज़दूरों के वर्ग बिल्कुल स्पष्ट हो गए। बेशक, नया सामाजिक गठन और चीन की समूची सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर उसका प्रभाव बहुत सीमित रहा। चीन एक ग्रामीण किसान समाज ही बना रहा।

शहरीकरण, उद्यम और समृद्धि ने इस नए बूर्जुआ वर्ग से दो नए सामाजिक वर्ग बना दिए—पहला, शहरी गणमान्य व्यक्ति जिन्होंने प्रशासन के कामों को संभाला, और दूसरा, बुद्धिजीवी। ये दोनों वर्ग विचारधारा के बंधनों से आपस में बंधे रहे। यह विचारधारा थी : व्यक्तिवाद में आस्था, उन्मुक्त बाज़ार व्यवस्था, प्रतिपादन और सृजनात्मकता। इस नए बूर्जुआ वर्ग की एकता का अपेक्षाकृत बड़ा कारण रहा राष्ट्रभक्ति का बोध और वर्गीय एकजुटता। इसलिए, चार मई के आंदोलन में, उन्होंने साथ-साथ संघर्ष किया।

29.10 शब्दावली

मन्दारिन : चीनी साम्राज्य के तहत उच्चाधिकारी।

बूर्जुआ वर्ग : कुलीन तंत्र या अत्यधिक धनी और मज़दूर वर्ग या सर्वहारा के बीच का सामाजिक वर्ग, मध्यम वर्ग। मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार, पूंजीपतियों का सामाजिक वर्ग।

कम्प्रेडर : पूर्ववर्ती चीन में एक स्थानीय एजेंट जो विदेशी व्यापार के लिए नियुक्त होता था, और जिसके पास स्वदेशी मज़दूरों का प्रभार होता था।

पूंजी निवेश : आय या मुनाफा कमाने के उद्देश्य से व्यापार आदि में धन लगाना।

पूर्वेक्षण : किसी खनिज की तलाश करना (इसका संबंध उत्खनन से है)।

29.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) ख
2) चीन में 1911 की क्रांति के बाद बूर्जुआ वर्ग ने अपनी उपस्थिति का आभास कराया। शहरीकरण और आर्थिक गतिविधियों ने चीन में बूर्जुआ वर्ग के एक मज़बूत शक्ति के रूप में उदय होने के लिए पर्याप्त सामाजिक आधार तैयार कर दिया। देखिए भाग 29.3
3) ग
4) चीन के राजनीतिक मामलों में सौदागर वर्ग की भूमिका सीमित रही। वे व्यवस्था का अंग बन गए। उनका शामिल होना कुछ ही समय के लिए था। देखिए भाग 29.4

बोध प्रश्न 2

1) घ
2) ग
3) व्यापार और वाणिज्य के विकास ने चीन के शहरी केंद्रों के लोगों को काफी बढ़ावा दिया। आर्थिक उछाल चीन में शहरीकरण के उदय का प्रमुख कारण थी।